प्रातःक्लास 13/7/68 ओमशान्तिः पिताश्री शिवबाबा याद है?
ओमशान्तिः "मीठे2 रूहानी बच्चों को बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ और बाप को याद करो।"
ओमशान्ति। इनका अर्थ तो बच्चों को समझाया है। बाप भी बोलते हैं ओमशान्ति। बच्चे भी बोलते हैं ओमशान्ति; क्योंकि आत्मा का स्वधर्म है शान्त। तुम अभी जान गये हो कि हम शान्तिधाम से यहाँ आते हैं पहले2 सुखधाम में। फिर 84 पुनर्जन्म लेते2 दुखधाम में आते हैं। यह तो याद है ना। बच्चे 84 जन्म जीवात्मा बनते हैं। बाप जीवात्मा नहीं बनते हैं। कहते हैं मैं टेम्पररी इनका आधार लेता हूँ। नहीं तो पढ़ावेंगे कैसे? बच्चों को घड़ी2 कैसे कहेंगे कि मन्मनाभव। अर्थात् मुझे याद करो और अपनी राजाई को याद करो। इसको कहा जाता है सेकण्ड में विश्व की बादशाही। बेहद का बाप है ना। तो जरूर बेहद की खुशी, बेहद का वरसा ही देंगे। भारत में ही आकर बच्चों को बाप बेहद का वरसा देते हैं। आज से 5000 वर्ष पहले तुम भारतवासी विश्व के मालिक थे जिसको सुखधाम भी कहते हैं। बाप बहुत2 सहज रास्ता बताते हैं। मीठे2 बच्चों अभी दुखधाम को बुद्धि से निकाल दो। यहाँ बहुत दुख है। इनको बुद्धि से निकाल दो। बाप जो नई दुनिया स्वर्ग स्थापन कर रहे हैं उनका मालिक बनने लिए मुझे याद करो। तो तुम्हारे सभी पाप कट जायेंगे। तुम फिर से सतोप्रधान बन जावेंगे। तुम जानते हो हम सतोप्रधान थे, फिर पुनर्जन्म लेते2 तमोप्रधान बने। अभी फिर सतोप्रधान बनना है। इसको कहा जाता है सहज याद। जैसे बच्चे लौकिक बाप को कितना सहज याद करते हैं। वैसे तुम बेहद के बच्चों को भी बेहद के बाप को याद करना है। बाप ही दुख से निकाल सुख में ले जाते हैं। वहाँ तो दुख का नाम–निशान नहीं। बहुत सहज बात कहते हैं अपने शान्तिधाम को याद करो। जो बाप का घर है वह तुम्हारा घर है और स्वर्ग नई दुनिया को याद करो। वह तुम्हारा राजधानी है। बाप तुम बच्चों की कितनी निष्काम सेवा करते हैं। तुम बच्चों को सुखी कर वानप्रस्थ परमधाम में बैठ जाते हैं। तुम भी परमधाम के वासी हो। जिसको निर्वाणधाम, वानप्रस्थ भी कहा जाता है। बाप आते ही हैं बच्चों को खिजमत करने अर्थात् वरसा देने। यह खुद भी बाप से वरसा लेते हैं? शिवबाबा तो है ऊँच ते ऊँच भगवान। शिव की मंदिर भी है। उनका कोई बाप वा टीचर नहीं। सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त का ज्ञान उनके पास है। कहाँ से आया? क्या कोई वेद–शास्त्र आदि पढ़े? नहीं। बाप है ही ज्ञान का सागर। वह सृष्टि के आदि मध्य अन्त को जानते हैं। बच्चे महिमा भी करते हैं बरोबर बाप सुख का सागर है, शान्ति का सागर है, पवित्रता का सागर है। यह महिमा और कोई की भी नहीं होती। विश्व के आदि मध्य अन्त का राज़ जो सुनाते हैं उनकी बायोग्राफी आक्युपेशन ही अलग है। फिर ऊँच ते ऊँच है जो विश्व के मालिक बनते हैं। जिनको ल0ना0 कहते हैं। इन्हों की महिमा अलग है। जो पूरे 84 जन्म लेते हैं उनकी महिमा करते हैं सर्वगुण सम्पन्न, 16 कला सम्पूर्ण..... फर्क है ना बाप की महिमा और दैवी गुणों वाले मनुष्यों की महिमा में। इन्हों को यह दैवी गुणों की प्राप्ति हुई है बाप से। तुम ही दैवी गुण धारण कर यह देवता बनते हो। पहले आसुरी गुण थे। असुर कहलाते थे। असुर से देवता बनाना यह तो बाप का ही काम है। एमआबजेक्ट भी तुम्हारे सामने हैं। तुम जानते हो पहला2 हमारा जन्म यह था। जरूर ऐसे श्रेष्ठ कर्म किये होंगे। कर्म–अकर्म–विकर्म की गति अथवा हर बात समझाने में सेकण्ड लगता है। बाप कहते हैं मीठे2 बच्चों तुम आत्माओं को पार्ट तो बजाना ही है। यह पार्ट तुमको अनादि अविनाशी मिला हुआ है। यह कब विनाश को नहीं पाता। तुम कितना बारी सुख–दुख के खेल में आये हो। कितना बारी तुम विश्व के मालिक बने हो फिर हार खाये हो। तुम विश्व के मालिक थे, कितने सुखी थे। अभी तो कुछ भी नहीं है। जमीन का टूकड़2 भी नहीं मिल सकता। कितना ऊँच बनते हो फिर कितना नीच होते हो। ऊँच को सतोप्रधान, नीच को तमोप्रधान कहा जाता है। तमोप्रधान से फिर सतोप्रधान में, फिर तमोप्रधान(सतोप्रधान) से सतोप्रधान(तमोप्रधान) में तुम कल्प कल्प आते हो। यह भी विचार करो आत्मा कितनी छोटी है। उसमें कितना पार्ट भरा हुआ है। आत्मा भी छोटी, और परमपिता परमात्मा जो सुप्रीम सोल है वह भी इतने छोटे हैं। वह बाप

ज्ञान का सागर, शान्ति का सागर है। तो तुम आत्माओं को भी आप समान बनाते हैं। तुम भी प्रेम का सागर, सुख का सागर..... बनते हो। देवताओं का आपस में कितना प्रेम है। कब झगड़ा नहीं होता। धनी आकर आप समान बनाते हैं। और कोई ऐसा बना न सके। तुमने कितनी भक्ति की है। यज्ञ–तप, दान–पुण्य आदि जन्म–जन्मान्तर किये हैं, उनका नतीजा क्या हुआ? तुम जानते हो सीढ़ी नीचे ही गिरते आये हो। रावण राज्य के कारण पतित बनते आये हो। अभी तुमको स्मृति आई है। हम पावन पूज्य थे, फिर पुनर्जन्म लेते2 पतित पुजारी बने हैं। भगवान के लिए कहना कि आपे ही पूज्य, आपे ही पुजारी। यह तो उनकी ग्लानि की जाती है। भगवान कैसे पुजारी बनेंगे? बाप आकर समझ देते हैं। उसने कोई शास्त्र आदि पढ़ी है क्या? कुछ भी नहीं। अनायास ही ड्रामा में पार्ट है। वह ज्ञान का सागर है। सारी आदि मध्य अन्त को जानता है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूलवतन। खेल स्थूलवतन में ही होता है। पहले2 आदि सनातन देवी–देवता धर्म के पार्ट बजाने आते हैं सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी। फिर इस्लामी, बौद्धी। नम्बरवार तुम समझ गये हो कौन2 इस माण्डवे में, वा नाटकशाला में आते हैं। 84 जन्म तुम लेते हो। गायन भी है आत्माएँ परमात्मा अलग रहे बहुकाल..... पहले2 तुम आत्माएँ आये। तो बाप से तुम अलग हुए हो। भल वह गाते हैं; परन्तु अर्थ कुछ भी नहीं जानते। कौन सी आत्माएँ बहुत समय अलग रही है? बाप कहते हैं, मीठे2 बच्चों पहले2 विश्व में पार्ट बजाने तुम आये थे। तुमने ही 84 जन्म लिए। मैं तो सिर्फ थोड़े समय के लिए इनमें प्रवेश करता हूँ। यह तो पुरानी जूती है। पुरुष की एक स्त्री मर जाती है तो कहते हैं पुरानी जूती गई अभी फिर नई लेते हैं। यह भी पुराना तन है ना। 84 जन्मों का चक्र लगाया हुआ है। तत् त्वम। तो मैं आकर इस रथ का आधार लेता हूँ। पावन दुनिया में तो मैं कब आता ही नहीं हूँ। तुम पतित ही मुझे बुलाते हो कि आकर पावन बनाओ। बुलाते2 आखरीन तुम्हारी याद फलीभूत तो होगी ना। जब पुरानी दुनिया खत्म होने का समय होता है तब मैं आता हूँ। ब्रह्मा द्वारा स्थापना। ब्रह्मा द्वारा अर्थात् तुम ब्राह्मणों द्वारा। ब्राह्मणों की चोटी कहा जाता है ना। पहले2 चोटी। ब्राह्मण फिर देवता क्षत्री..... यह तुम बाजोली खेलते हो। 84 जन्मों का राज़ कितना सहज कर समझाते हैं। वह लोग त्रिमूर्ति बनाते हैं, कहते भी हैं ब्रह्मा द्वारा स्थापना; परन्तु किसकी? वह तो जानते ही नहीं। तुम समझते हो विष्णु राज्य की स्थापना। जिसको ल0ना0 का राज्य कहते हैं। समझानी तो बहुत ही सहज है। एक तो अपन को आत्मा समझना है। देह अभिमान को छोड़ देहीअभिमानी बनना है। तुम 84 शरीर लेते हो। मैं तो एक ही बार सिर्फ इस तन का लोन लेता हूँ। किराया पर लेता हूँ। हम इस मकान के मालिक नहीं हैं। इनको तो फिर भी हम छोड़ देंगे। किराया तो देना पड़ता है ना। बाप भी कहते हैं मैं इस मकान का किराया देता हूँ। बेहद का बाप है कुछ तो किराया देते होंगे ना। यह तख्त लेते हैं तुमको समझाने के लिए। ऐसा समझाते हैं जो तुम विश्व के तख्त नसीन बन जाते हो। खुद कहते हैं मैं नहीं बनता हूँ। तख्त नसीन अर्थात् ताऊसी तख्त। शिवबाबा की याद में ही सोमनाथ का मंदिर बनाया है। बाप कहते हैं उससे मुझे क्या टेस्ट आवेगी। जड़–पुतला रख देते हैं। मज़ा तो तुम बच्चों को स्वर्ग में है। मैं तो स्वर्ग में आता ही नहीं हूँ। फिर भक्तिमार्ग शुरू होता है तो यह मंदिर आदि बनाने कितना खर्चा किया। फिर भी चोर लूटकर ले गये। अभी वह ताऊसी तख्त है? बाप कहते हैं हमारा जो बनाया हुआ था वह गजनवी आकर लूट ले गये। रावण के राज्य में तुम्हारा धन–दौलत आदि सभी खलास हो जाता है। कितने तुम सॉलवेन्ट थे। भारत जैसा सॉलवेन्ट और कोई देश नहीं। भारत जैसा तीर्थ और कोई बन नहीं सकता। भारत की महिमा अपरमअपार है। भारत ही बड़े ते बड़ा तीर्थ था; परन्तु आजकल तो हिन्दूधर्म के अनेक तीर्थ हो पड़े हैं। वास्तव में बाप जो सर्व की सद्गति करते हैं तीर्थ तो उनका होना चाहिए। यह भी ड्रामा बना हुआ है। समझाने में बहुत सहज है; परन्तु नम्बरवार ही समझते हैं; क्योंकि यह राजधानी स्थापन हो रही है। सतयुग आदि के मालिक यह है ना। यह है उत्तम ते उत्तम पुरुष। जिनको फिर देवता कहा जाता है। दैवी गुण वाले को देवता कहा जाता है। यह ऊँच ते ऊँच धर्म

वाले प्रवृत्ति मार्ग वाले थे। उस समय तुम्हारा ही प्रवृत्ति मार्ग रहता है। सन्यास धर्म वाले वहाँ हो न सके। वह राजाई को अच्छा समझते ही नहीं है। काग विष्टा समान सुख कह देते हैं। करप्शन, एडल्ट्रेशन कितनी की है। बाप की बायोग्राफी में नाम दूसरे का डाल दिया है। तो जैसे कि दूध में पानी डाल दिया है। इतने बड़े2 विद्वान–पंडित आदि कोई भी इस भूल को नहीं जानते। बेहद का बाप जो कल्प2 वरसा देते हैं उनकी कितनी ग्लानि की है। गाली दी है कच्छ अवतार–मच्छ अवतार। सर्वव्यापी का ज्ञान बुद्धि में है ना। तो इसको कहा जाता है बाप की अति ग्लानी। तो बाप डोरापा देते हैं कितनी मेरी ग्लानि की है। कृष्ण को कितनी गालियाँ दी हैं कि इतनी 16108 रानियाँ थी। (निजाम का मिसाल) बाप ने तुमको डबल सिरताज बनाया, रावण ने फिर दोनों ही ताज उतार दिया। अभी नो ताज। न पवित्रता का ताज, न धन का ताज। दोनों ही रावण ने उतार दिया है। फिर बाप आकर दोनों ताज तुमको देते हैं याद और पढ़ाई से। इसलिए सभी गाते हैं। विलायत वाले भी कहते हैं ओ गाड फादर। हमारा गाइड बनो। लिबरेट भी करो। तब तुम्हारा नाम भी पण्डा रखा हुआ है। पाण्डव कौरव क्या करत भये। कहते हैं हे बाबा हमको इस दुख के राज्य से छुड़ाकर साथ ले जाओ। यह सच्ची2 कहानी बाप तुमको सुनाते हैं। बाप ही सच–खण्ड स्थापन करते हैं जिसको स्वर्ग कहा जाता है। फिर उनको झूठखण्ड रावण बनाती है। वह रामराज्य वह रावण राज्य। वह राम नहीं जिसकी सीता चुराई गई। कितनी ग्लानि की बात लिख दी है। मेरी भी ग्लानी कर दी है। कितनी भूल है; परन्तु ऐसे भूल को भारतवासी जानते नहीं हैं। सभी कह देते हैं कृष्ण भगवानुवाचः। बाप कहते हैं शिवभगवानुवाचः। भारतवासियों ने नाम बदल लिया है। कृष्ण तो है देहधारी। विदेही तो एक शिवबाबा है। हिन्दु कहलाने वाले अपन को चमाट मारी है। धर्मभ्रष्ट–कर्मभ्रष्ट बने हैं इसलिए मुसलमान लोग भी काफिर कहते हैं। उनको न अपना धर्म है, न धर्म पर ईमान है तो अपना धर्म ही छोड़ दिया है। अभी बाप द्वारा तुम बच्चों को कितनी शक्ति मिलती है। सारे विश्व के तुम मालिक बनते हो। सारा आसमान धरती तुमको मिल जाती है। कोई की ताकत नहीं जो तुमसे छीन सके पौना कल्प। उन्हों की तो जब वृद्धि हो, करोड़ों का अन्दाज में हो तब लश्कर ले आकर तुमको जोते। बाप बच्चों को कितना सुख देते हैं। उनका गायन है ही दुख हर्ता सुख कर्ता। इस समय बाप तुमको कर्म, अकर्म, विकर्म की गति बैठ समझाते हैं। रावण राज्य में कर्म विकर्म बन जाते हैं। सतयुग में कर्म अकर्म हो जाते हैं। सन्यासी लोग भल अक्षर पढ़ते हैं; परन्तु समझते नहीं। उनको समझने का ही नहीं। वह तो है ही निवृत्ति मार्ग वाले। इन गुरुओं ने तो सभी की सत्यानाश कर दी है। सद्गुरु तो अकालमूर्त है। अभी तुमको एक सद्गुरु मिला है जिसको पतियों का पति कहा जाता है। क्योंकि वह पति लोग भी उनको याद करते हैं। तो बाप समझाते हैं यह कितना वन्डरफुल ड्रामा है। इतनी छोटी सी आत्मा में अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। जो कब मिटने का नहीं है। इनको अनादी अविनाशी ड्रामा कहा जाता है। गाड इन(ज़) वन। रचना अथवा सृष्टि भी एक ही है। न रचना को न रचयिता के आदि मध्य अन्त को कोई जानते। यह ही नहीं जानते थे तो फिर और कैसे जान सकते। ऋषि–मुनि भी कह देते थे हम नहीं जानते हैं। यह है ही नास्तिकों की दुनिया। वह है आस्तिकों की दुनिया। सतयुग में लड़ाई झगड़ा आदि कुछ होती। अभी तुम संगम पर बैठे हो। माया के साथ है युद्ध। वह छोड़ती नहीं। कहते हैं हम विकार में कभी नहीं जावेंगे। खून से लिखकर देते हैं फिर देहअभिमान में आने से माया का थप्पड़ लग जाता है। की कमाई चट हो जाती है। भगवान पढ़ाते हैं तो अच्छी रीत पढ़ना चाहिए ना। ऐसी पढ़ाई तो फिर 5000 वर्ष के बाद मिलेगी। वही सुप्रीम बाप, टीचर, गुरु भी है। वही सर्व की सद्गति करते हैं। कितनी अच्छी कहानी है। यह भूलना न है। टीचर को कब भूलना न है। एक भूले तो दूसरे, तीसरे। तब बाप घड़ी2 कहते हैं अपन को सदैव आत्मा निश्चय करो। आत्मा अविनाशी, शरीर विनाशी है। तुम उल्टा लटक पड़े हो। अभी बाप आकर सुल्टा बनाते हैं। अच्छा। बेहद के बाप को याद करना है। तो तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। तुम्हारी एम आबजेक्ट तो सामने खड़ी है। आत्मा को 84 के चक्र की नॉलेज मिली है। तो तुम बने हो स्वदर्शनचक्रधारी। फिर जो ब्राह्मण से देवता बनते हैं तो यह नॉलेज रहती नहीं। अच्छा बच्चों को गुडमार्निंग और नमस्ते।